रमज़ान के बाद आज्ञाकारिता पर कैसे स्थिर रहें ?

[हिन्दी – Hindi – هندي]

अहमद अब्दुल मजीद मक्की

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2013 - 1434

IslamHouse.com

﴿كيف تثبت على الطاعة بعد رمضان﴾

« باللغة الهندية »

أحمد عبد المجيد مكي

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1434

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

रमज़ान के बाद आज्ञाकारिता पर कैसे स्थिर रहें ?

यह देखा जाता है कि बहुत से वे मुसलमान जो रमज़ान के महीने में बहुत सारी नेकियों जैसे ज़िक्र, दान (खैरात), नमाज़ के लिए जल्दी जाने इत्यादि की पाबंदी करते थे, इस महीने की समाप्ति के बाद वे इन नेकियों को छोड़ देते हैं, उन पर स्थिर नहीं रहते हैं। यह मामला यदि ऐसे ही जारी रहा तो इसका बंदे के ईमान, उसके अंत और उसके परलोक पर खतरा है।

जबकि अल्लाह तआला ने अपने इस कथन में हमें मृत्यु आने तक नेकियों और आज्ञाकारिता पर स्थिर रहने का आदेश दिया है :

﴿واعبد ربك حتى يأتيك اليقين﴾ (الحجر: ٩٩)

"और अपने पालनहार की उपासना करते रहें यहाँ तक कि आपकी मृत्यु आ जाए।" (सूरतुल हिज्र : 99).

तथा उसने हमें आदेश दिया है कि हम प्रति दिन कई बार उससे यह प्रश्न करें कि वह हमें सीधा मार्ग दर्शाए।

इस स्थिरता के लिए कुछ रूकावटें और उसके कुछ कारण हैं, यदि मनुष्य उसकी रूकावटों से बचे और उसके कारणों को अपनाए तो अल्लाह की अनुमति से वह आज्ञाकारिता पर स्थिर रहेगा।

निम्नलिखित पंक्तियों में इन रूकावटों में से ज़्यादातर और इन कारणों में से सबसे महत्वपूर्ण का संक्षेप वर्णन किया जा रहा है, आशा है अल्लाह सर्वशक्तिमान इसके द्वारा इसके पाठक और इसके लेखक को लाभ पहुँचाए।

सर्व प्रथम : रुकावटें :

पहली रुकावट : दीर्घ आकांक्षा व आशा : इसकी वास्तविकता : दुनिया की अभिरूचि, उसकी ओर आकर्षित होना, उससे प्यार करना और आखिरत से उपेक्षा करना है। जबकि अल्लाह तआला ने अपने निम्न कथन में हमें इस रोग से सावधान किया है : ''और आकांक्षाओं ने उन्हें धोखे में डाल दिया।'' अर्थात लंबी आकांक्षा और आशा।

तथा अल्लाह तआला ने इस बात को स्पष्ट किया है कि वह दिल के कठोर होने का कारण है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ﴾ (الحديد:١٦)

''और उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें इनसे पहले किताब दी गयी थी, फिर जब उन पर एक लंबी मुद्दत खत्म हो गई तो उनके दिल कठोर हो गए।'' (सूरतुल हदीद : 16).

तथा अल्लाह सर्वशक्तिमान ने स्पष्ट किया है कि वह मनुष्य के अपने जीवन के लक्ष्य से

गाफिल रहने का कारण है, जैसाकि अल्लाह सर्वशक्तिमान का फरमान है :

﴿ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ﴾ (الحجر:٣)

''आप उन्हें छोड़ दें, वे खायें और लाभ उठाएं और लंबी आशा उन्हें गफलत में डाले रखे। निकट ही उन्हें पता चल जाएगा।'' (सूरतुल हिज्र : 3).

तथा इस बात का उल्लेख किया है कि वह पतन और गिरावट का कारण है, चुनाँचे फरमाया :

﴿إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَى أَدْبارِهِمْ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ

الْهُدَى الشَّيْطانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَى لَهُمْ﴾ (محمد : ٢٥)

''जो लोग अपनी पीठ के बल फिर गए इसके बाद कि उनके लिए हिदायत स्पष्ट हो चुकी, निःसन्देह शैतान ने उन के लिए (उनके कामों को) शोभनीय कर दिया है और उन्हें ढील दे रखी है। (सूरत मुहम्मद : 25).

अर्थात शैतान ने उनके लिए उनकी गलतियों (पापों) को अच्छा बनाकर पेश किया है, उनकी आशाओं व आकांक्षाओं में विस्तार कर दिया है, और उनसे दीर्घायु का वादा किया है। और यह सब केवल इस कारण है –जैसाकि अल्लामा

कुर्तुबी फरमाते हैं – यह एक लाइलाज बीमारी और पुराना रोग है। जब यह दिल में घर कर जाती है तो उसका स्वभाव बिगड़ जाता है और उसका उपचार कठिन हो जाता है, उसे कोई बीमारी नहीं छोड़ती है और न ही कोई दवा उसमें लाभ देती है, बल्कि उसने चिकित्सकों को थका दिया है तथा वैज्ञानिक और बुद्धिजीवी उसके ठीक होने से निराश हो चुके हैं। हसन अल–बसरी का कहना है : जिस बंदे ने भी आशा लंबी की उसने बुरा कार्य किया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने सच्च कहा है! क्योंकि लंबी आशा व आकांक्षा कार्य से आलसी बना देती है, सुस्ती व शिथिलता का करण बनती है, व्यस्तता व निष्क्रियता को जन्म देती है, तथा उसे दुनिया

का मोहित बना देती है और इच्छाओं की ओर मोड़ देती है। और यह ऐसा मामाला है जो दृष्टि से देखा गया है, इसे स्पष्ट करने की जरूरत नहीं है और न ही इसके लिए प्रमाण की आवश्यकता है, जिस तरह कि लघु आशा (आकांक्षाओं का सीमित होना) कार्य करने पर उभारती है और मुक़ाबला और एक दूसरे से आगे बढ़ने का आग्रह करती है। हसन बसरी रहिमहुल्लाह की बात समाप्त हुई।

दूसरी रुकावट : वैध चीज़ों के इस्तेमाल में विस्तार से काम लेना :

इस में कोई शक नहीं कि अनुमेय चीज़ों जैसे खान–पान, और कपड़े इत्यादि में विस्तार से

काम लेना कुछ आज्ञाकारिता के कामों (नेकियों) में कमी और उनपर अस्थिरता का कारण है। यह विस्तार निर्भरता व आश्रय, नींद और आराम व राहत को जन्म देता है, बल्कि मकरूह (घृणित) चीज़ों में पड़ने की तरफ ले जाता है, क्योंकि अनुमेय चीज़ें इच्छाओं का द्वार हैं, और इच्छाओं की कोई सीमा नहीं है। इसीलिए अल्लाह तआला ने पवित्र चीज़ों से खाने का आदेश दिया है, और उसमें अति करने से रोका है। अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ﴾

(طه: ٨١)

''हमने जो पवित्र चीज़ें तुम्हें प्रदान की हैं उनसे खाओ और उसमें अति न करो।'' (सूरत ताहा : 81).

इसका मतलब अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ों को हराम ठहराना नहीं है, चुनाँचे हमारे पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम – जो कि सबसे सच्चे ज़ाहिद थे – शहद और हल्वा पसंद करते थे, मांस खाते थे, और जो भी चीज़ आपको प्रस्तुत की जाती थी उसे स्वीकार करते थे सिवाय इसके कि उस चीज़ की आपको इच्छा न हो। अनुमेय चीज़ का प्रयोग करने में कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मुसीबत इस चीज़ में है कि वही स्वयं लक्ष्य और उददेश्य बन जाए।

तीसरी रुकावट : ईमान के माहौल से दूर रहना

हमारे अक़ीदा के सिद्वान्तों में से है कि ईमान घटता और बढ़ता है। यदि बंदा अपने आपको अश्लीलता, अनैतिकता, बेपर्दगी और श्रृंगार प्रदर्शन के माहौल से दो चार करता है या उसका दिल सदैव दुनिया और दुनियावालों में व्यस्त रहता है तो उसका ईमान कमज़ोर और शिथिल हो जाता है, इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्पष्ट किया है कि अल्लाह के निकट सबसे प्रिय स्थान मस्जिदें हैं और सबसे से अप्रिय जगहें बाज़ार हैं। ऐसा मात्र इसलिए है कि मस्जिदें आज्ञाकारिता के घर और रहमतों के उतरने के स्थान हैं जबकि बाज़ार धोखाधड़ी, छल और झूठे शपथ, वादा–खिलाफी और इसी तरह की अन्य चीज़ों के स्थानन हैं।

शरीअत ने नेक लोगों और सदाचारियों की संगत अपनाने और उनके संग रहने पर उभारा है ताकि मुसलमान की नेकियों के करने और बुराईयों को त्यागने की आदत बन जाए।

तथा इस बात की पुष्टि कि वातावरण बंदे के ईमान को प्रभावित करता है, ज्ञानी के उस उत्तर से भी होती है जो उसने सौ हत्या करनेवाले आदमी को दिय था जब उसने पूछा कि : क्या उसके लिए तौबा है ? तो ज्ञानी ने कहा : ‘‘जी हाँ, और तुम्हारे और तुम्हारे तौबा के बीच कौन रूकावट है ? तुम फलाँ भूमि में चले जाओ, क्योंकि वहाँ ऐसे लोग हैं जो अल्लाह की पूजा करते हैं, तो तुम उनके साथ

अल्लाह की पूजा करो, और अपने देश की ओर न लौटना क्योंकि वह बुरी भूमि (जगह) है।''

द्वितीय : कारण

पहला कारण : स्थिरता के लिए प्रार्थना करना :

अल्लाह के बंदों के गुणों में से है कि वे अल्लाह से इस बात की प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें आज्ञाकारिता पर जमा दे और उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करने के बाद उनके दिलों को टेढ़ा न करे। उनका यह विश्वास होता है कि आदम के बेटों के दिल रहमान के उंगलियों में से दो उंगलियों के बीच हैं, वह उन्हे जिस तरह चाहता है फेरता है। इसीलिए अल्लाह के पैगंबर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अधिक से अधिक यह दुआ पढ़ते थे :

«اللّٰهُمَّ يا مُقَلِّبَ القلوب ثَبِّتْ قلبي على دينك، اللّٰهُمَّ يا مُصَرِّف القلوب صرف قلبي إلى طاعتك»

''ऐ अल्लाह! ऐ दिलों को उलटने पलटने वाले! मेरे दिल को अपने दीन पर स्थिर करदे। ऐ अल्लाह! ऐ दिलों को फेरनेवाले! मेरे दिल को अपनी आज्ञाकारिता की तरफ फेर दे।'' तथा आपकी दुआओं में से यह भी था :

«اللّٰهُمَّ اهدني ويَسِّر الهدى لي»

''ऐ अल्लाह मुझे मार्गदर्श प्रदान कर और मार्गदर्शन को मेरे लिए आसान कर दे।''

तथा आप ने अली रज़ियल्लाहु अन्हु को आदेश दिया वह अल्लाह से विशुद्धता और मार्गदर्शन का प्रश्न करें, तथा इब्ने उमर रज़ियल्लाह अन्हुमा यह दुआ किया करते थे :

«اللّٰهُمَّ يَسِّرني لليسرى وجَنِّبْنِي العسرى»

''ऐ अल्लाह! मुझे आसानी के लिए आसान कर दे, और मुझे परेशानी व कठिनाई से दूर करदे।''

दूसरा कारण : विभिन्न प्रकार की आज्ञाकारिता करना और उनकी तरफ जल्दी करना

अल्लाह सर्वशक्तिमान की हमारे ऊपर यह दया व कृपा है कि उसने हमारे लिए अनेक प्रकार की इबादतें (पूजा के कृत्य) निर्धारित किए है ताकि नफ्स जिसके करने पर सक्षम है उसे अपना ले, चुनाँचे उनमें से कुछ शारीरिक इबादतें हैं, और कुछ आर्थिक, शाब्दिक और हार्दिक हैं। और अल्लाह ने हमें उन सबको करने में पहल करने और उनमें कोताही न करने का आदेश दिया है। इस तरह की विविधता और उस पहल और शीघ्रता के द्वारा मुसलमान आज्ञाकारिता पर स्थिर रहता है, और उकताहट

और ऊब उसके ऊपर पूजा व उपासना के रास्त को नहीं काटती है, अल्लाह तआला के इस कथन के अनुकूल :

﴿وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا﴾ (النساء:٦٦).

''यदि उन्हों ने वह काम किया होता जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है, तो उनके लिए बहुत अच्छा होता, और अधिक स्थिरता का पात्र होता।'' (सूरतुन निसा : 66).

तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका संकेत दिया है जबकि आप ने अपने

सहाबा से पूछा : ''तुम में से आज किसने रोज़े की हालत में सुबह की है ?'' अबू बक्र ने कहा कि मैं ने। आप ने कहा : ''आज तुम में से कौन जनाज़ा के पीछे गया है ?'' अबू बक्र ने कहा : मैं। आप ने कहा : ''आज तुम में से किसने गरीब को खाना खिलाया है ?'' अबू बक्र ने कहा : मैं ने। आप ने पूछा : ''आज तुम में से किसने बीमार की तीमारदारी की है ? अबू बक्र ने कहा : मैं ने। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जिस व्यक्ति के अंदर भी ये चीज़े एकट्ठा होगईं वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा।'' हम देखते हैं कि उपर्युक्त आज्ञाकारिता के कामों ने विभिन्न प्रकार की इबादतों को एकत्र कर दिया है। चुनाँचे उनमें से कुछ

शारीरिक पूजा हैं (जैसे– रोज़ा, जनाज़ा के पीछे जाना, बीमार की तीमारदारी करना) और कुछ वित्तीय पूजा हैं (जैसे गरीब को खाना खिलाना), तथा कुछ बहु–लाभ वाली इबादतें है उदाहरण के तौर पर (बीमार की तीमारदारी करना, जनाज़ा के पीछे जाना, गरीब को खाना खिलाना) तथा कुछ सीमित लाभ वाली पूजा है (जैसे रोज़ा)।

तीसरा कारण : मस्जिद और मस्जिद वालों से संबंध और लगाव :

मस्जिद और मस्जिद वालों से संबंध रखने में आज्ञाकारिता पर स्थिरता व जमाव पर सहायता होती है, क्योंकि उसमें जमाअत की नमाज़, नेक

संगति, स्वर्गदूतों (फरिश्तों) की दुआ, ज्ञान की मंडली, अल्लाह की तौफीक़, उसकी रक्षा और संरक्षण पाया जाता है। इस बारे में कुरआन व हदीस के प्रमाण बहुत अधिक और प्रसिद्ध हैं।

चौथा कारण : सदाचारियों की कहानिया पढ़ना :

अल्लाह तआला ने अपनी किताब में ईश्दूतों और पिछले लोगों के समाचारों में से अच्छी अच्छी कहानियों का उल्लेख किया है, और वे मनोरंजन और रात के समय कथा वाचने के लिए नहीं उल्लेख किए गए हैं बल्कि ताकि हम उनसे लाभ उठाएं और उनसे नसीहत और सीख प्राप्त करें। उसके लाभों में से आज्ञाकारी

विश्वासी पुरूषों और महिलाओं के दिलों को स्थिर करना है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَكُلًّا نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهِ فُؤَادَكَ﴾ (هود:١٢٠).

"और हम पैगंबरों के सब समाचार आपसे बयान करते हैं जिसके द्वारा हम आप के दिल को सुदृढ़ और मज़बूत करते हैं।" (सूरत हूद : 120)

बहुत से लोगों की स्थितियाँ महान पुरूषों और बड़े लोगों के समाचार को पढ़ने की वजह से बेहतर और बहुत अच्छी हो जाती हैं, विशेषकर प्रथम पुनीत पूर्वजों की जीवनियों से जिन्हों ने बलिदान, पूजा, जुह्द, जिहाद और अल्लाह के

मार्ग में खर्च करने इत्यादि में महान उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। और वास्तव में वे लोगों के तिल, और राष्ट्रों के प्रदाता थे। तो इनकी जीवनियों का अध्ययन करने से मनुष्य के अंदर महान उत्साह पैदा होता है।

पाँचवाँ कारण : अल्लाह के पास जो स्थायी नेमतों हैं उसके लिए उत्सुकता और जिज्ञासा

परलोक और बदले पर यक़ीन और विश्वास का होना आदमी के लिए नेकियों को करना और बुराईयों को त्यागना आसान कर देता है, जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿واستعينوا بالصبر والصلاة وإنها لكبيرة إلا على الخاشعين الذين يظنون أنهم ملاقو ربهم وأنهم إليه راجعون﴾ (البقرة:٤٥-٤٦)

''और सब्र व नमाज़ के द्वारा मदद हासिल करो। और यह भारी चीज़ है, लेकिन अल्लाह से डरने वालों के लिए नहीं। जो यक़ीन रखते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और वे उसकी ओर पलट कर जने वाले हैं।'' (सूरतुल बक़रा : 45–46)

तथा एक हदीस में जो उत्साह को बढ़ाती है और नेक काम तथा उस के ऊपर स्थिरता पर उभारती है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे लिए स्वर्ग में सबसे कम पद वाले आदमी

का उल्लेख करते हुए कहते हैं : मूसा ने अपने पालनहार से पूछा : स्वर्ग में सबसे कमतर पद वाला आदमी कौन है ? फरमाया : वह ऐसा आदमी है जो जन्नत वालों के जन्नत में दाखिल हो जाने के बाद आएगा। तो उससे कहा जायेगा : जन्नत में दाखिल हो जा। तो वह कहेगा : ऐ मेरे पालनहार! मैं कैस प्रवेश करूँ जबकि लोग अपने स्थान ग्रहण कर चुके हैं ? तो उससे कहा जाएगा : क्या तू इस बात को पसंद करता है कि तुझे दुनिया के राजाओं में से किसी राजा के राज्य के बराबर मिल जाए ? तो वह कहेगा : मेरे रब मुझे पसंद है। तो अल्लाह उससे कहेगा : तुझे वह मिल गया, और उसके समान और भी, और उसके समान और भी। तो

पाँचवी बार में उसने कहा : मेरे रब! मैं प्रसन्न हो गया। उन्हों ने कहा : मेरे पालनहार तो उनमें सबसे ऊँचे पद वाला कौन है ? अल्लाह ने फरमाया : वे लोग हैं जिन्हें मैं ने चुन लिया है और उनके सम्मान का प्रबंध अपने हाथ से किया है और उस पर मुहर लगा दी है। चुनाँचे उसे न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना, और न किसी मनुष्य के दिल में उसकी कल्पना आयी है।'' आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : इसकी पुष्टि अल्लाह की किताब (कुरआन) में है :

﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾ (السجدة: ١٧).

“कोई प्राणी नहीं जानता जो कुछ हम ने उनकी आँखों की ठंडक उनके लिए छिपा रखी है, जो कुछ वे करते थे यह उसका बदला है।” (सूरतुस्सजदा : 17).

हम अल्लाह से प्रश्न करते हैं कि वह हमें अपनी आज्ञाकारिता में लगाए और हमें उस पर सुदृढ़ कर दे। **आमीन**